Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
9
2018
VOL. 156

Founder's Essay

कठिन समस्याएँ ईंधन है जो मन के अन्दर की अग्नि को प्रज्वलित करता है

लोग कहते हैं कि यदि आप सौभाग्य की देवी का आवाहन करते हुए अपने परिवार में आने की प्रार्थना करते हैं, और वह अपनी छोटी बहन, दुर्भाग्य की देवी के साथ आती हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जीवन में, दुर्भाग्य सौभाग्य का उलटा पक्ष हैं। जब आप दुर्भाग्य का निवारण कर लेते हैं, आप नीचे दबी खुशी के अंकुर को खोजते हैं।

ऐसा समय आता है, जब इस तथ्य के बावजूद भी आप स्वयं अनुभव करते हैं कि आप उतना परिश्रम करते हैं जितना कर सकते हैं, आपके प्रयास का दूसरों द्वारा गलत समझा जाता है और आप पर उसका गलत प्रभाव पड़ता है और आप कहीं के नहीं रहते हैं। अब फिर आपके पास जो कुछ भी है, दे देते हैं, लेकिन परिणाम कुछ नहीं, आपकी सोच के विपरीत आता है। जब चीजें इस तरह चलती हैं कोई भी उदासीनता का शिकार हो जाएगा।लेकिन जब मेरे सम्बन्ध, समस्याएँ पैदा होती हैं, जो सामान्य लोगों को पीला कर देती हैं और उन्हें अपने हाथों में अपने सिर को ढ़क लेना पड़ता है। तब मैं खुद को बताता हूँ कि चीजें दिलचस्प होने वाली हैं ! मैं स्वीकार करता हूँ कि जो प्रतिकूल है अच्छाई के रूप में और विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल के रूप में लेकर, समाधान के लिए प्रयास करें।ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे लगता है कि ऐसा करना बुद्ध मार्ग का अभ्यास करना है।

जब मैं जवान था, किसी ने मुझे एक बार कहा, "आप ऐसे व्यक्ति हैं जो पहचानहीन और नीरस दिन में सुस्त पड़ जाते हैं, लेकिन जब कुछ घटता है, तो यह आपको क्रियाशील बना देता है।" कठिन समस्याएँ ईंधन है जो मनके अन्दर की अग्नि को प्रज्वलित करता है!

यदि आप अपना सब कुछ दे देते हैं, ऐसा कोई होगा जो आपको देखेगा और आपके प्रयासों को पहचानेगा। और अगर किसी का ध्यान नहीं भी जाता है, बुद्ध सभी के साक्षी हैं। मुझे लगता है कि जो इसके प्रति आश्वस्त है, उसका विश्वास सच्चा है।

From Kaisozuikan 9 (Kosei Publishing Co.), pp. 128-129

Living the Lotus
Vol. 156 (September 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

सभी जीवों की सेवा में

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

आभार के साथ सेवा

जीवित रहने के लिए, समय-समय पर हमें भोजन, वस्त्र और मकान की आवश्यकताओं का प्रबन्ध करना पड़ता है। इस सम्बन्ध में, बौद्ध धर्म हमें "जीवित रहने के सही उपायों के माध्यम से उन्हें प्राप्त करना" सिखाता है। यह आष्टांगिक मार्ग का पांचवाँ अंग "सम्यक आजीव" है, और यह उन लोगों पर लागू होता है जो हमें बताकर समकालीन समाज में रहते हैं, और कहते हैं, "सही काम के माध्यम से अपनी आजीविका उपार्जन करना है। "हालाँकि, विभिन्न प्रकार के कामों में, यह निर्धारित करना कठिन है कि कौन सा काम सही है और कौन नहीं है। इसलिए, "सही काम" के सम्बन्ध में "सही" का क्या अर्थ है?

किसी ने मुझे यह सिखाया, "किसान फसलों की सेवा में है, ग्वाला गायों की सेवा में है, और शिक्षक बच्चों की सेवा में है।" शब्द "काम" के लिए चीनी में दो कैरेक्टर (जापानी में, शिगोतो) आता है, पहले का अर्थ "सेवा में" और दूसरे का अर्थ "कुछ" हैं। "सेवा में" अस्तित्व के एक शालीन रूप का पालन करना है। इसलिए, आपके काम के आधार में जो व्यक्ति या पदार्थ है उसके सम्बन्ध आदर, सम्मान और कृतज्ञता के साथ सोचना चाहिए, और आपको अपनी सारी शक्ति के साथ दी गई भूमिका या कार्य को निभाना चाहिए। इस तरह का दृष्टिकोण, मेरी राय में "सही" का अर्थ दर्शाता है।

इसके अलावा, 1957 से 1963 तक क्योटो विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत डॉ को हिरासावा ने एक बार लिखा था: "सुबह में, महत्वाकांक्षा और उत्साह के साथ अपना काम शुरू करें। शाम को जब उस दिन का काम पूरा हो जाता है, आपको कृतज्ञ होना चाहिए, और जैसे ही तनाव खत्म हो जाता है, आप शान्ति से आनंद के साथ ब्रह्मांड की सभी चीजों के प्रति आभार प्रकट करने के भाव से अपने हाथों को जोड़ने जैसा महसूस करेंगे" (Ikiyo kyo mo yorokonde / [चलो हम खुशी के साथ आज रहें], चिचि शुप्पन, 1995)। सभी चीजों के सामने सम्मान में अपने हाथों को जोड़ने की भावना, यह आभार का विचार हमारे सम्यक आजीव की नींव है-न केवल हमारे काम के मामले में, बल्कि हमारे दैनिक जीवन के हर पहलू में।जब आपको ऐसा एहसास हो, आप शिकायत या असंतोष के किसी भी विचार को छोड़ सकते हैं, और जो भी आप देखते हैं उसमें खुशी खुशी स्वयं को तल्लीन कर सकते हैं।

जीवन जीने का सम्यक मार्ग

मेरे विचार से, हम कह सकते हैं कि जीवन जीने का सम्यक मार्ग काम तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हमारे दैनिक जीवन में जो कुछ भी हमारे सामने आता है, उसका निष्पादन का भर सक प्रयास करना भी शामिल है। इसमें घर के काम और बच्चा पालन, निस्सन्देह, किसी और की देखभाल करना या उस समय भी जब उस व्यक्ति की देखभाल की जा रही है, जो देवताओं और बुद्धों द्वारा दी गई एक भूमिका है, दूसरे शब्दों में, यह भूमिका नियति ने उसके लिए तय किया है और खुशी से इसे स्वीकार करना और खुशी से अभ्यास करना के अलावा सम्यक जीवन कोई नहीं है।

शाक्यमुनि ने कामना की कि "विश्व के सभी जीवित प्राणी को खुशी और शान्ति मिले, और उनका जीवन सुखशांतिमय हो।" हालाँकि हम सोच सकते हैं कि यह कुछ दूरगामी प्रमुख उपक्रम है, इस सम्बन्ध ऐसी बात नहीं है। हम सभी जीवन की खुशी में योगदान करने में सक्षम हैं, अगर हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन के एक छोटे से दायरे में लापरवाह नहीं है, सही जीवन जीने के प्रति अध्यवसायी है। ऐसा करके, हम शाक्यमुनि की कामना के लोक को साकार बनाने के लिए अपने प्रयासों की शक्ति से विशाल लहर उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हम सभी सूक्ष्म तरंगों की तरह विश्व का समस्त जीवन शरीर तथा मन से जुड़ा हुआ है।

संयोग से, आष्टांगिक मार्ग के बारे में सोचने में, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा बौद्ध धर्म के एक जापानी विद्वान हाजीमे नाकामुरा (1912-99) के निम्नलिखित शब्द मेरी आँखों के सामने आ गये, "सम्यक दृष्टि अभ्यास का प्रारंभ है और यही अंत है। आपको सदा सही दृष्टिकोण से भटकना नहीं चाहिए" (गेंशी बुक्क्यो नो सिकात्सू रिन्न [Ethics of life in early Buddhism], शुंजुशा, 1995)।

हम भले ही सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्मान्त, और इस महीने का विषय सम्यक आजीविका के प्रत्येक में पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हैं या नहीं, उनमें से सभी का आधार सम्यक दृष्टि है, और जिसका अर्थ है कि चीजों को वैसे ही देखना, जैसा वे हैं। जापानी भिक्षु और विद्वान जिउन सोन्जा (1718-1804) ने जोर देकर कहा है, "यदि आप सही नहीं देख रहे हैं, तो बाकी सब कुछ अंधकार है।"

रिश्शो कोसेइ काइ के सह-संस्थापक, म्योको नागानुमा, जब अपने सदस्यों के उद्धार कार्य में स्वयं को समर्पित कर रखी थी, प्रायः उनको सख्त सलाह देती थीं कि "प्रातः देर तक नहीं सोना चाहिए। "मैं सोचता हूँ कि वह हम सभी को कह रही थीं कि बुद्ध की धर्मदेशना प्रकाश देती है, जब हम आधारभूत शिक्षा का अनुपालन करते हैं और श्रद्धाविश्वास जीवित प्राणियों के दैनिक जीवन का उपादान है। सितम्बर, 10 को हम सभी सह-संस्थापक, म्योको नागानुमा, का स्मरणोत्सव मनायेंगे।

From Kosei, September 2018.

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

अमितार्थ सूत्र

अध्याय-3 दस पुण्यबल

यह अध्याय आध्यात्मिक पुण्य बल की व्याख्या करता है जो अमितार्थ सूत्र की देशना को समझने और अभ्यास करने से प्राप्त किया जाता है, अनेक अच्छे कार्यों को हम पूरा करने में सक्षम होंगे, और जिसके माध्यम से हम अन्य लोगों और संसार के लिए उपयोगी हो सकेंगे।

प्रश्नकर्ता, बोधिसत्व महासुभूति ने पूछा है कि यह देशना कहाँ से आता है?, यह कहाँ जाता है?, और वहाँ कहाँ अवस्थित रहता है? बुद्ध ने उत्तर में कहा कि मूल रूप से यह देशना बौद्धों के मन के अन्तरतम से आता है; इसका उद्देश्य सभी लोगों में परम सम्यक सम्बोधि, अर्थात् बुद्धों के बोधिज्ञान, की आकांक्षा उत्पन्न कराना है; और यह वहीं अवस्थित रहता है, जहाँ लोग बोधिसत्व चर्या का अभ्यास करते हैं।

बुद्धों की अभिलाषा

बुद्धों के मन के अन्तरतम की अभिलाषा है कि सारा जीवन अपनी प्रकृति के अनुसार स्वयं को परिपूर्ण बनाये। यह बौद्धों की मूल अभिलाषा है, और यदि हम मानव प्राणी ही केवल इस अभिलाषा के अनुसार जीते हैं, हमारी परेशानियाँ खत्म हो जाएगी। लेकिन साधारण लोग मनमौजी स्वयं के कैदी हैं, जो स्वयं के निर्देशों के अनुसार जीवन जीते हैं, स्वयं से चिपकते हैं, और इस तरह स्वयं को पीड़ा में डालते हैं।

हम कह सकते हैं कि बुद्धों के सम्बोधि ज्ञान का अर्थ है, सभी परिस्थितियों में, जिस तरह से विश्व में सभी वस्तुओं की अवस्थिति है और उनकी प्रकृति के अनुसार स्वरूप है, उस प्रक्रिया का ज्ञान है।

मानव प्राणियों पर भी लागू है का अर्थ है, जीने का सही तरीका यह है कि वैसे ही जीना जैसे हैं। क्योंकि साधारण लोग, वैसे ही जीना जैसे हैं, को इतना कम समझते हैं, इसलिए शाक्यमुनि ने अपने श्रोताओं की परिस्थितियों के अनुसार अपनी देशना के विभिन्न स्पष्टीकरण का सहारा लिया है। इन विभिन्न स्पष्टीकरणों को उपाय कौशल्य के माध्यम से देशना के रूप में वर्णन किया है।

उपाय कौशल्य के माध्यम से उपदेश करना प्रशंसनीय और संतोषजनक है, लेकिन परिस्थिति में और व्यक्ति की स्थिति में बदलाव के साथ कठिनाइयाँ आती है। ऐसा होता है कि कभी कभी स्थिति का सही आकलन विफल हो जाता है।

बोधि ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न करना

इस प्रकार, ऐसा होता है कि समझदार व्यक्ति परमार्थ सत्य की जिज्ञासा उत्पन्न करता है, यह सभी लोगों पर सभी स्थितियों में लागू होता है, जिसे "बोधि ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न करना" के रूप में वर्णित किया गया है और अमितार्थ की देशना का विषय इस जिज्ञासा को उत्पन्न करता है।

केवल अभ्यास में इसका असल मूल्य छिपा है

अब, इस प्रश्न के उत्तर में कि कहाँ यह देशना अवस्थित रहता है, हम देखते हैं कि इसका वास्तविक अवस्थान किताबों या दिमाग में नहीं है, बल्कि व्यवहार में है। दरअसल, केवल अभ्यास में ही देशना जीवित है।

इन तीन चीजें सर्वोच्च महत्व के हैं - बौद्धों के मन में देशना की उत्पत्ति, बोधि ज्ञान की जिज्ञासा को उत्पन्न करने का उद्देश्य, और स्वयं के अभ्यास में अध्यवसाय। इस तरह के तत्व, न केवल अमितार्थ की देशना में हैं, बल्कि सभी महायान की देशनाओं में भी है। इसे समझने के लिए आवश्यक है कि इन्हें ग्रहण करें और दृढ़ता से ध्यान में रखें।

सूत्र के मूल में लौटकर, हम दस पुण्य बलों में से प्रथम पुण्य बल की बुद्ध की व्याख्या को पढ़ें, यह सर्वोच्च महत्व का है:

"सर्वप्रथम, यह सूत्र बोधिसत्व बना सकता है, जिसमें अभी तक बोधि ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हुई है, उसकी जिज्ञासा जगा कर, जिसमें दयाभाव की कमी है, उनमें महाकरुणा की जिज्ञासा जगा कर, जो हिंसा में रत है, उसमें क्षमाभाव की जिज्ञासा जगा कर, जो ईर्ष्यालु है उसमें दूसरों के प्रति मैत्रीभाव की जिज्ञासा जगाकर। जो ईर्ष्यालु हैं दूसरों के लिए खुश रहने की जिज्ञासा जगाकर हैं; जिनमें आसक्तियाँ हैं, वे अनासक्ति की इच्छा जगाकर; जो कंजूस हैं, उदार बनने की इच्छा जगाकर; जो अहंकारी हैं, उनमें शीलों के पालन की इच्छा को जगाकर; जो क्रोधी हैं, उनमें सहिष्णुता की इच्छा को जगाकर; जो आलसी हैं, उनमें ध्यान की इच्छा जगाकर; जो अज्ञानी है, उनमें ज्ञान उत्पन्न कराकर; जो दूसरों का उद्धार नहीं करते हैं उनके उद्धार की इच्छा उत्पन्न कराकर; जो दस अकुशल कार्यो में संलग्न है, उनमें दस गुणों की इच्छा उत्पन्न कराकर; जो लौकिक चीजों में लिप्त हैं, उनमें अलौकिक की आकांक्षा जगाकर; जो प्रतिगामी हैं, आगे बढ़ने की इच्छा उत्पन्न कराकर; जो अपवित्र कृत्यों में लगे हैं, उन्हें विशुद्धि को जगाकर। कुल पुत्रों! इसे इस सूत्र का पहला अकल्पनीय शक्तिशाली गुण कहा जाता है।"

उपर्युक्त लेखांश का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। हमारे लिए जो महत्वपूर्ण है, वह यह खोज करना है कि क्यों अमितार्थ सूत्र में ऐसे गुण हैं।

त्रिविध पुण्डरीक सूत्र

अध्याय -1 विषय प्रवेश

अर्थ और सारांश

इस अध्याय को "प्रवेश" कहा जाता है, जो एक विशाल लंबी व्याख्या का परिचय या प्रस्तावना है। लेकिन भले ही इसे "प्रवेश" कहा गया है, लेकिन इसकी सामग्रियाँ कम नहीं है, क्योंकि यह परम सत्य को उद्घाटित करने का तरीका सुझाता और तैयार करता है।

जो प्रथम बार पुण्डरीक सूत्र को पढ़ता है, उसके लिए इतना अनुभव कर लेना यथेष्ट है कि इसमें कुछ प्रभावशाली है, सुझाव और तैयारी की सराहना करने में अभी समर्थ नहीं है। लेकिन, जो इस सूत्र का अध्ययन बार बार करता है, और दूसरों से विवेचना करने की कोशिश करता है, उसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह सुझाव और तैयारी के प्रति जागरूक रहे और इसके अर्थ को समझे। इस अध्याय की अवहेलना नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यह प्रवेश / परिचय / प्रस्तावना है।

पूर्ववर्ती अमितार्थ सूत्र की तरह पुण्डरीक सूत्र का प्रारंभ बुद्ध के उपदेश को सुनने के लिए एकत्र महासमागम के परिवेश के वर्णन और प्रमुख पुरुषों की गणना के साथ होता है। हमें बताया जाता है कि अमितार्थ सूत्र के उद्घोष के उपरान्त बुद्ध समाधि में प्रवेश कर गये, या गहरी एकाग्रता की स्थिति में चले गये। एकत्र समागम में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के साथ-साथ उपासकों और उपासिकाओं, हिंदू देवों तथा असुरों की बड़ी संख्या थी। उनमें मानव नहीं थे। सभी ने कृतज्ञता में अपने हाथों को जोड़कर बुद्ध की ओर देखा, जब अचानक उनके ऊर्णा (भौहों के बीच के सफेद बालों) से एक प्रकाश रश्मि निकली। उस प्रकाश रश्मि ने विश्व के सभी दिशाओं को, देवलोको के परे के विश्व के सभी लोको, यहाँ तक कि अविचि नरक गहराई तक को **देदीप्यमान** किया।

इस असाधारण घटना ने प्रशंसा से महासमागम को भर दिया, लेकिन केवल बोधिसत्व मैत्रेय यह सोचकर कि इसका क्या अर्थ है, अचम्भित हुए। स्वयं इसका समाधान निकालने में असमर्थ, उन्होंने इस प्रश्न को ज्ञान के भंडार, बोधिसत्व महासत्त्व मञ्जुश्री के सामने रखा।

मञ्जुश्री ने पहले गद्य में, फिर गाथा में उत्तर देते हुए कहा दूर अतीत के युगों में एक बुद्ध हुए थे जिनको सूर्यचन्द्रप्रदीप कहा जाता था। मञ्जुश्री ने इस बुद्ध की धर्मदेशना का प्रचार प्रसार किया। तदुपरांत, अप्रत्याशित रूप से पर्याप्त, कहा कि उनके परिनिर्वाण के बाद एक एक कर बीस सहस्र बुद्ध हुए, उन सभी का नाम भी सूर्यचंद्रमाप्रदीप था।

इसके बाद, मञ्जुश्री ने बताया कि उनमें से जो अन्तिम थे, उन्होंने मानव जाति के कल्याण हेतु अमितार्थ सूत्र का उद्घोष किया और फिर गहरे ध्यान में प्रवेश कर गये। जैसाकि यहाँ वर्तमान शाक्यमुनि बुद्ध के साथ हुआ, उनके भौहों के बीच के उर्णा के सफेद बालों से प्रकाश रश्मि विकिरित हुई, जो अनगिनत लोकों को देदीप्यान किया। मञ्जुश्री ने कहना जारी रखा है, "जब सूर्यचन्द्रप्रदीप अपने ध्यान से उठे, तो उन्होंने जानकारी दी...सद्धर्म का कमल फूल...[और] मध्यरात्रि में निर्वाण में प्रवेश कर गए।"

मञ्जुश्री ने निष्कर्ष निकाला कि वर्तमान तथागत, शाक्यमुनि, सभी लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए सद्धर्मपुण्डरीक का उद्घोष करेंगे और लोक को विधिसंगत और सुंदर बनायेंगे। इसके गाथा के साथ अध्याय समाप्त हो जाता है।

लोटस सूत्र का स्वरूप

जैसा कि इस सारांश से देखा जा सकता है, पुण्डरीक सूत्र एक प्रकार से नाट्यशैली के रूप में है जिसमें अत्यधिक असाधारण घटनायें दिखाई पड़ती हैं। हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सूत्र के रचनाकार का उद्देश्य श्रोताओं के हृदय को छूने के लिए परिचित प्रतीकात्मक उपकरणों और नाट्य शैली का सहारा लेकर शाक्यमुनि द्वारा उद्घोषित सत्य को शनैः शनैः समझने में समर्थ बनाना है। यह सत्य इतना गहरा था कि उस समय के लोग इसे पूरी तरह से समझ नहीं सकते थे। इसे समझना महत्वपूर्ण है।

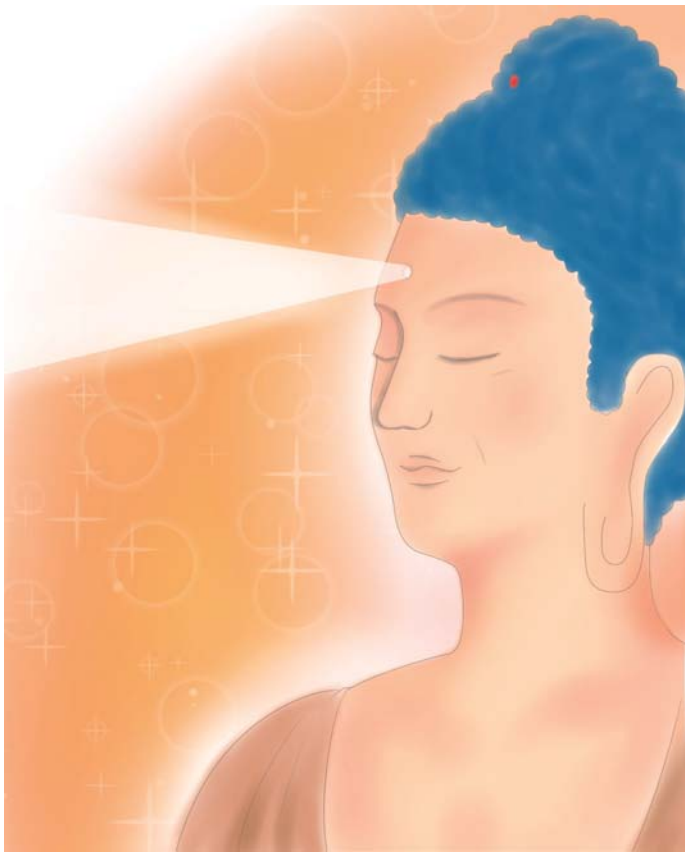

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 24-32)

जीवन यापन का सम्यक मार्ग

आप सब कैसे हैं?क्या आप शेष ग्रीष्म की गर्मी से पीड़ित हैं? इस गर्मी में, जापान अत्यधिक गर्मी से भुनता रहा था। "प्रचण्ड" गर्मी की लहर जापान को हर दिन ढ़क लेता था। ऐसा लगता है कि हमें शरद ऋतु की ठंडी हवा का आनंद लेने से पूर्व कुछ समय के लिए इंतजार करना पड़ सकता हैं।

गर्मी के मौसम की प्रचण्ड गर्मी की बात करें, तो जब 2006 की गर्मियों में, संस्थापक की जन्म शताब्दी मनायी जा रही थी, तब भी "प्रचण्ड गर्मी" थी। अक्टूबर में तीसरी विश्व संघ की बैठक से पूर्व, अगस्त में रिश्शो कोसेइ-काइ इंटरनेशनल ने उत्तर अमेरिका से टोक्यो मुख्यालय की परिवार तीर्थयात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें परिवार के तीन पीढ़ी के सदस्यों सहित कुल सत्तर सदस्यों ने भाग लिया। मुझे याद है कि पहली बार कार्यक्रम में भाग लेने वाले युवा सदस्यों ने अपनी भावनाओं को उत्साहपूर्वक साझा किया और कहा कि कार्यक्रम के दौरान एक सेकंड भी बर्बाद नहीं हुआ था।

अब मैं महापवित्र पावन हॉल में बुद्ध और एक यान के बहुमूल्य स्तूप की हर दिन नियमित रूप से पूजार्चना करता हूँ। पारिवारिक तीर्थयात्रा कार्यक्रम को याद करते हुए, मैं हर दिन ऐसा करने में सक्षम होने के लिए अपनी गहरी प्रशंसा का नवीकरण करने से रोक नहीं सकता हूँ।

"सम्यक जीवन" आष्टांगिक मार्ग का एक अंग है जिसका अर्थ है, अपने घर को बौद्ध वेदिका को केन्द्र में रखकर सुव्यवस्थित रखना है। मुझे आशा है कि हम बुद्ध का संरक्षण के लिए, उनकी सम्यक धर्मदेशना के लिए और अद्‌भुत संघ के सदस्यों की सहायता के लिए आभार प्रकट करेंगे। अपने मन में आभार के साथ स्वयं को अध्यवसाय में लगाये रखना है।

रेवरेन्ट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

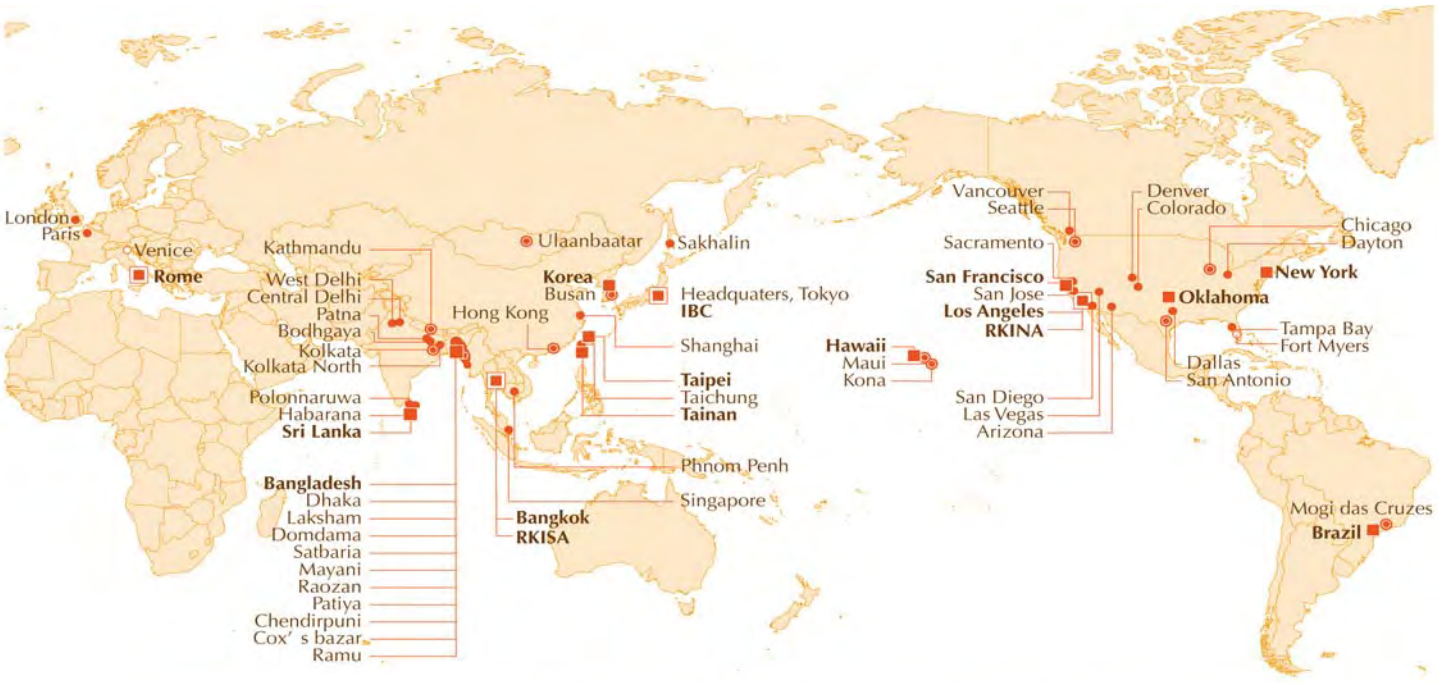

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai
Overseas Dharma Centers 2018

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar, New Delhi
110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai